02 सितम्बर, 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/-   आर. एन. आई. 31109/77   JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 11
सितम्बर (प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ढाईद्वीप जिनायतन में पंचकल्याणक के पूर्व...

ढाईद्वीप रथ प्रवर्तन एवं भव्य पात्र सम्मान समारोह

इन्दौर : श्री कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर के तत्त्वावधान में ढाईद्वीप जिनायतन में आयोजित होने वाले श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रचार-प्रसार के लिए ढाईद्वीप की रचना सादृश्य अलौकिक सौंदर्य युक्त रथ तैयार किया गया, जो पंचकल्याणक से पूर्व सम्पूर्ण भारत वर्ष में भ्रमण करते हुए, साधर्मियों को पंचकल्याणक में आमंत्रित करेगा।

इसी उपलक्ष्य में ढाईद्वीप जिनायतन में दिनांक १४ व १५ अगस्त २०२२ को एक विशिष्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें नव-निर्मित ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन, पंचकल्याणक के पात्रों सम्मान एवं ढाईद्वीप मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर (Online), बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, श्री महीपाल ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री अशोकजी जबलपुर, श्री अशोकजी सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, श्री अजितजी वीशुभाई जैन सूरत, श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर, श्री विजयभाई दादर, श्री नितिनभाई बोरीवली, श्री श्रेयांशजी कोलकाता, श्री चिन्मयभाई बड़कुल, श्री उल्लासभाई जोबालिया, श्री अशोकभाई मुम्बई, श्री कमलजी पाड़लिया, श्री आनन्दजी पाटनी, श्री महेशजी भोपाल आदि अतिथियों का सान्निध्य मिला। **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील का अभिनन्दन

चैतन्यधाम-अहमदाबाद : यहाँ १९ से २१ अगस्त २०२२ तक अखिल भारतीय जैन युवा फैड़रेशन गुजरात के तत्त्वावधान में आयोजित आध्यात्मिक ज्ञान वैराग्य शिक्षण शिविर के अवसर पर २१ अगस्त २०२२ को वीतरागी जिनधर्म प्रभावक, सरल स्वभावी, आत्मख्याति विशेषज्ञ डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर को वीतरागी जिनशासन की परम्परा के पुनीत प्रवाह में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने एवं श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर रहकर जैनदर्शन के विद्वान तैयार करने हेतु वृहद स्तर पर श्रीफल, शॉल, माला एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

यह सम्मान श्री कुन्दकुन्द कहान बाबूभाई मेहता चैरिटेबल ट्रस्ट चैतन्यधाम एवं श्री वेतालीस दशा हुम्मड़ दिगम्बर जैन समाज द्वारा ट्रस्ट के समस्त ट्रस्टियों, विशिष्ट अतिथियों, सहस्रादिक साधर्मियों व शास्त्री स्नातकों की उपस्थिति में किया गया।

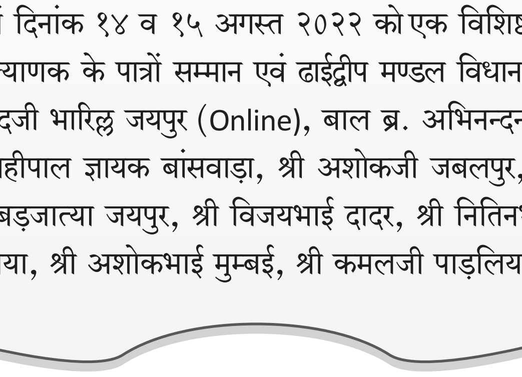

ज्ञातव्य है कि इस प्रसंग पर चैतन्यधाम में संचालित विद्यालय के १० वर्षीय सफल संचालन के उपलक्ष्य में विद्यालय ने अपने समस्त भूतपूर्व विद्यार्थियों को आमंत्रित कर सम्मानित किया।

विशिष्ट विद्वानों में पण्डित शैलेशभाई तलोद, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ का समागम प्राप्त हुआ। चैतन्यधाम के प्रमुख श्री अमृतलालजी चुन्नीलालजी मेहता, उपप्रमुख श्री अनिलभाई ताराचन्दजी गांधी, मंत्री श्री राजुभाई वाडीलालजी शाह, प्रतीकभाई चन्द्रकान्तजी शाह द्वारा आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित सचिनजी शास्त्री ने किया।

42 सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

सातवें अधिकार में जिन चार प्रकार के मिथ्यादृष्टियों का विवेचन किया है, उनमें केवल निश्चय का अवलम्बन करके मिथ्यात्व का पोषण करने वाला जीव निश्चयाभासी है। केवल व्यवहार के अवलम्बन से क्रियाकाण्ड को ही धर्म मानकर उससे चिपके रहने वाला जीव व्यवहाराभासी है; निश्चयाभासी भी एकान्ती है और व्यवहाराभासी भी।

अब यहाँ तीसरे प्रकार के मिथ्यादृष्टि के रूप में उभयाभासी की चर्चा प्रारम्भ करते हैं। जिनागम में दोनों नयों का स्वरूप कहा है, इसलिए यह जीव निश्चयनय को भी स्वीकार करता है और व्यवहारनय को भी स्वीकार करता है; लेकिन निश्चय और व्यवहार दोनों के एकान्त को ही ग्रहण करता है, इसलिए मिथ्यादृष्टि है। पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि यह जीव निश्चय का भी आभास लिए हुए है और व्यवहार का भी आभास लिए हुए है, इसलिए उभयाभासी है। जिनमत में दो नय कहे गए हैं, उनमें से किसी एक को कैसे छोड़ें? इसलिए भ्रमित होकर दोनों को स्वीकार करता है और स्वयं को अनेकान्तवादी समझता है।

इन जीवों की कुछ प्रवृत्तियाँ तो निश्चयाभासियों जैसी और कुछ प्रवृत्तियाँ व्यवहाराभासियों जैसी होती हैं। कभी-कभी तो आत्मा को शुद्ध कहकर स्वच्छन्दी हो जाते हैं, पूजा-पाठ, प्रवचन-दर्शन, उपवासादि को निरर्थक समझते हैं और कभी-कभी थोड़ा बहुत दान-पुण्य करके अपने को बहुत बड़ा धर्मात्मा समझने लगते हैं - इसप्रकार निश्चयाभासी और व्यवहाराभासी दोनों के समान ही प्रवृत्ति करते हैं।

उभयाभासी जीवों की सबसे बड़ी भूल यह है कि वे मोक्षमार्ग को दो प्रकार का मानते हैं अर्थात् कुछ लोग निश्चय के मार्ग से मोक्ष जाते हैं और कुछ व्यवहार के मार्ग से मोक्ष जाते हैं। पण्डितजी उनसे कहते हैं कि मोक्षमार्ग दो प्रकार का नहीं है, मोक्षमार्ग का निरूपण दो प्रकार से किया जाता है। वीतरागभाव ही एक मात्र सच्चा मोक्षमार्ग है और जो मोक्षमार्ग तो नहीं है; लेकिन मोक्षमार्ग में निमित्त है, सहचारी है, उसे उपचार से मोक्षमार्ग कहना व्यवहार मोक्षमार्ग है। अत: दो मोक्षमार्ग मानना तो मिथ्या है।

किसी वस्तु का नाम निश्चय और किसी वस्तु का नाम व्यवहार - ऐसा नहीं है। निश्चय और व्यवहार तो वस्तु को देखने की दो दृष्टियाँ हैं। किसी द्रव्य के भाव को उस रूप ही निरूपित करना निश्चय है और उपचार से किसी द्रव्य के भाव को अन्य द्रव्य के भाव रूप निरूपित करना व्यवहार है। जैसे - मिट्टी के घड़े को मिट्टी का घड़ा कहना निश्चय है और घी के संयोग से उसे घी का घड़ा कहना व्यवहार है।

यहाँ कोई कहे कि समयसार में शुद्ध आत्मा के अनुभव को निश्चय और व्रत, तप, संयमादि को व्यवहार कहा है, उसीप्रकार तो हम मानते हैं? पण्डितजी कहते है कि शुद्ध आत्मा का अनुभव सच्चा मोक्षमार्ग है, इसलिए उसे निश्चय मोक्षमार्ग कहा है तथा व्रत, तप आदि मोक्षमार्ग तो नहीं है, निमित्त आदि की अपेक्षा से उन्हें व्यवहार मोक्षमार्ग कहा है।

फिर वह कहता है कि हम श्रद्धान तो निश्चय का रखते हैं और प्रवृत्ति व्यवहार की करते है, इसप्रकार दोनों को स्वीकार करते हैं। पण्डितजी कहते हैं कि निश्चय का निश्चयरूप और व्यवहार का व्यवहाररूप श्रद्धान करना ही योग्य है। तू कहता है कि निश्चय का श्रद्धान रखते हैं तो एक नय का श्रद्धान करने से तो एकान्त मिथ्यात्व होता है और रही बात प्रवृत्तियों की तो प्रवृत्तियाँ तो द्रव्य की परिणति है, उसमें नय का प्रयोजन ही नहीं है।

जिस द्रव्य की प्रवृत्ति है, उसे उसी द्रव्य की कहना निश्चय और अन्य द्रव्य की कहना व्यवहार - इसप्रकार अभिप्राय अनुसार प्रवृत्तियों में दो नय लगते हैं, प्रवृत्तियाँ स्वयं नयरूप नहीं हैं; परन्तु यह जीव आत्मा की प्रवृत्ति को निश्चय और शरीर की प्रवृत्ति को व्यवहार मानता है। जबकि व्रत उपवासादि जड़ की क्रियायें हैं, उन्हें जड़ का कहना निश्चय है अर्थात् शरीर की क्रिया को शरीर की कहना निश्चय है और आत्मा की क्रिया को पुद्गल का कहना व्यवहार है। किसी व्यक्ति की महिमा उसके स्वाश्रित गुणों से मानना निश्चय है और उसके पिता के कारण, पैसे के कारण, सम्पत्ति के कारण महिमा मानना पराश्रित होने से व्यवहार है।

साररूप बात तो यह है कि निश्चयनय को तो सत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान करना और व्यवहारनय को असत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान छोड़ना। षट्पाहुड़ में भी कहा है कि -

जो व्यवहार में सोता है, वह योगी अपने कार्य में जागता है तथा जो व्यवहार में जागता है, वह अपने कार्य में सोता है।

इसलिए व्यवहार नय का पक्ष छोड़कर निश्चय नय का श्रद्धान करना योग्य है।

(क्रमशः)

लड़ना नहीं, नहीं लड़ना ही सीखना है

- वीरसागर जैन

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के खण्डकाव्य 'भरत का अन्तर्द्वन्द्व' का केन्द्रिय प्रतिपाद्य 'लड़ना नहीं, नहीं लड़ना ही सीखना है' बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, सभी समस्याओं का अचूक समाधान है। यद्यपि यहाँ इसे केवल भाई-भाई पर घटित किया गया है; परन्तु यदि इसे पिता-पुत्र, पति-पत्नी, सास-बहू आदि सम्बन्धों पर भी घटित कर लिया जाए तो इसका बहुत व्यापक लाभ होगा।

यदि यह मंत्र एक बार हृदय में बैठ जाएगा कि लड़ाई एकदम निरर्थक और अनर्थक होती है तथा प्रेम बहुत अनमोल होता है, उसके समक्ष सारी बातें तुच्छ होती हैं तो फिर कभी किसी की किसी से लड़ाई नहीं होगी। समझ लो घर-समाज में सारा कलह समाप्त हो जाएगा और सर्वत्र प्रेम का सागर लहराने लगेगा।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का सम्मान

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग द्वारा ८०,९०,९५ व उसके बाद हर वर्ष वय प्राप्त करने वालों का सम्मान किया जाता है। इसी शृंखला में श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल धर्मपत्नी आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का टोडरमल स्मारक भवन के प्रवचन हाल में सैकडों साधार्मियों की उपस्थिति में सम्मान किया गया।

सम्भाग के अध्यक्ष महेन्द्रकुमारजी जैन पाटनी द्वारा इस योजना का परिचय देते हुए कहा कि यह सम्मान का कार्य गत ३५ वर्षो से किया जा रहा है। उन्होंने श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का जीवन परिचय भी दिया। सम्भाग के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्रकुमारजी जैन पाटनी, मंत्री डॉ. राजेन्द्रकुमारजी जैन, संयुक्त मंत्री श्री निर्मलजी संधी, श्री राजेशजी बडजात्या, श्री सुरेन्द्रजी मोदी, श्री शांतीलालजी गंगवाल तथा श्री ताराचन्दजी सौगानी ने इनका तिलक, माला, शॉल एव स्मृति चिन्ह प्रदानकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि टोडरमल स्मारक के कार्यक्रमों में इनका निरन्तर सहयोग रहता है।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में १४ अगस्त २०२२ को **जिन प्रवचन - जिनवाणी** विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित मनीषजी 'कहान' जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से विनम्र जैन हीरापुर व शास्त्री वर्ग से कपिल जैन बम्होरी चुने गए। सत्र का संचालन रीतेश जैन अमरमऊ तथा अमन जैन ग्वालियर एवं मंगलाचरण आर्जव जैन सिवनी ने किया।

दिनांक २८ अगस्त २०२२ को **नियमसार निर्ग्रन्थ गुरू** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी ने की। गोष्ठी में प्रथम स्थान मोहित जैन, फुटेरा व द्वितीय स्थान शाश्वत जैन सागर ने प्राप्त किया। सत्र का संचालन आदित्य जैन फुटेरा तथा सोमिल जैन खनियांधाना ने एवं मंगलाचरण मोक्ष जैन पिड़ावा ने किया।

उक्त गोष्ठियों में आभार-प्रदर्शन महाविद्यालय के उपप्रचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा संचालित...

पुस्तकालय में पुस्तक मेला

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित कुन्दकुन्द सरस्वती पुस्तकालय अब समय के साथ और अधिक व्यवस्थित, विकसित एवं विस्तृत हो रहा है, इस हेतु अनेक योजनाएँ पुस्तकालय समिति द्वारा तैयार की जा रही हैं।

नई दिशा में कदम बढ़ते हुए दिनांक १७-१८ अगस्त २०२२ को बाबूभाई सभागृह में एक 'पुस्तक मेला' आयोजित किया गया। मेले में धार्मिक व लौकिक दोनों प्रकार के साहित्य को सम्मिलित किया गया, जिसमें सर्वोदय अहिंसा, हंसा प्रकाशन, लोकायत प्रकाशन, RBSA आदि ने अपनी प्रदर्शनी लगाई।

१७ अगस्त को पुस्तक मेले का उद्घाटन श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि की गौरवपूर्ण उपस्थिति में हुआ।

सभी की उपस्थिति में **श्रेष्ठ पाठक** के तौर पर प्रत्येक कक्षा से क्रमश: आयुष जैन उदयपुर, स्वस्ति जैन मिरज, अविरल जैन खनियांधाना, चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी व स्वानुभव जैन खनियांधाना इसप्रकार एक-एक विद्यार्थी चुने, जिन्हें पुरस्कृत किया गया। पुस्तकालय के विकास में डॉ. नीलिमाजी पाटनी एवं हितेशजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

पृष्ठ 1 का शेष...

सौभाग्यशाली परिवार

१४ अगस्त को प्रात: ध्वजारोहण श्री अनिलजी जैन जैनको परिवार इन्दौर ने एवं रथ का अनावरण श्री अशोककुमारजी–सुशीलकुमारजी बजाज परिवार कोलकाता व श्री मुकेशजी जैन 'जैना ज्वैलर्स' परिवार ग्वालियर ने किया।

द्वि–दिवसीय संगोष्ठी : १४ अगस्त को प्रथम दिन प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना की अध्यक्षता में **पंचकल्याणक क्या, क्यों और कैसे ?** एवं १५ अगस्त को द्वितीय दिन अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की अध्यक्षता में **ढाईद्वीप : एक परिशीलन** विषय पर मार्मिक संगोष्ठियाँ हुईं। संगोष्ठी में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित रमेशजी बांझल, पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर एवं विदुषी सारिकाजी छाबड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए।

पंचकल्याणक के पात्रों का भव्य सम्मान

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित संजयजी शास्त्री जेबर के पंचकल्याणक से संबंधित उद्बोधन एवं प्रवचनों के अतिरिक्त ढाईद्वीप में आयोजित होने वाले आदिनाथ पंचकल्याणक के सभी पात्रों का भव्य सम्मान किया गया एवं रात्रि में छ: माह पूर्व आयोजित होने वाली इंद्रसभा भी लगाई गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित बिपिनजी शास्त्री, मुम्बई एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ, जिसमें पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. विवेकजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री के विशेष सहयोग रहा।

२० से २६ जनवरी २०२२ तक आयोजित यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव विश्व का अद्वितीय आदर्श पंचकल्याणक होगा।

जिन देशना यूथ कन्वेंशन सानन्द सम्पन्न

ज्ञानोदय–भोपाल : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान परमार्थिक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में १९ अगस्त से २१ अगस्त २०२२ तक **जिन देशना यूथ कन्वेंशन** नामक कार्यक्रम श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर ट्रस्ट ज्ञानोदय दीवानगंज में आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम २० से ४५ वर्ष के युवाओं की मुख्यता आयोजित किया गया, जिसमें जैनाचार व जैन संस्कृति के पाठ पढ़ाए गए।

ध्वजारोहण श्री तीर्थेशजी संजयजी दीवान, सूरत व श्री प्रखरजी–श्रेयाजी चौधरी, भोपाल ने किया। कार्यक्रम के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री साकेतजी कमलजी बड़जात्या, दादर के अतिरिक्त श्री अरिहंतजी तिलकजी चौधरी, किशनगढ़ व श्री ध्याताजी बजाज, कोटा थे।

इस शिविर में अन्तरराष्ट्रीय युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ एवं पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल द्वारा अकर्तावाद, अपरिग्रह, संसारमार्ग–मोक्षमार्ग, जीवन में समताभाव की उपयोगिता, सुखी होने का आधार – ऐसे अनेक विषयों पर मार्मिक चर्चा का लाभ मिला।

अन्य गतिविधियों में आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी के सी.डी प्रवचन के अतिरिक्त योग, प्रार्थना, पूजन–विधान, भक्ति–संध्या एवं ज्ञानोदय के विद्यार्थियों द्वारा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा लिखित पश्चाताप पर नाटक की प्रस्तुति हुई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में पण्डित आशीषजी टीकमगढ़, पण्डित आभासजी पुणे, पण्डित अमितजी अरिहन्त, पण्डित श्रेयांसजी अभाना पण्डित प्रशमजी छिन्दवाड़ा, श्री अनिलजी धवल, श्री दीपकजी धवल के सहयोग से हुआ।

सृजन शिरोमणि अलंकरण से विभूषित डॉ. बंसल

जयपुर (राज.) : यहाँ समन्वय वाणी फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अयोजित समन्वयवाणी फाउण्डेशन न्यास के राष्ट्रीय अधिवेशन में दिनांक २६ अगस्त २०२२ को समन्वय वाणी के संपादक एवं अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के महामंत्री डॉ. अखिलजी बंसल को उनके ७०वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में पाथेय साहित्य कला अकादमी तथा अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् जबलपुर द्वारा साहित्य के क्षेत्र में किए गए श्रेष्ठ कार्यों हेतु 'सृजन शिरोमणि अलंकरण' से विभूषित किया गया।

आपको यह अलंकरण बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् की कार्याध्यक्षा श्रीमती प्रभाजी विश्वकर्मा 'शील' ने प्रशस्तिपत्र, शॉल, श्रीफल व माल्यार्पण कर प्रदान किया।

विशेष परिचर्चा सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत २१ अगस्त २०२२ को 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जैनदर्शन की व्यवहारिकता' विषय पर बहुत ही मार्मिक परिचर्चा पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

परिचर्चा में पण्डित संयमजी शास्त्री, नागपुर की अध्यक्षता प्राप्त हुई। परिचर्चा का संचालन पण्डित संदेश जैन, दिल्ली ने किया।

श्री चौबीस तीर्थंकर विधान सम्पन्न

चिदायतन–हस्तिनापुर : यहाँ दिनांक १४ अगस्त २०२२ को श्री शान्तिनाथ अकम्पनाचार्य कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री चौबीस तीर्थंकर विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ के समयसार पर व्याख्यान का लाभ मिला एवं पण्डित नगेशजी पिड़ावा ने बोलता समयसार का विमोचन कर उसका महत्त्व बताया तथा डॉ. नितिनजी भोपाल, ब्र. श्रद्धाजी देवलाली, ब्र. प्रतीतिजी देवलाली का समागम मिला। आभार–प्रदर्शन श्री नवनीतजी जैन एवं श्री अंबुजजी जैन ने किया।

पंच परमेष्ठी मण्डल विधान एवं व्याख्यानमाला

सोनागिर–दतिया : यहाँ श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट द्वारा श्री कुन्दकुन्द नगर में १९ से २१ अगस्त २०२२ तक श्री पंच परमेष्ठी मण्डल विधान एव व्याख्यानमाला का आयोजन स्वर्गीय श्री पूनमचंदजी सेठी दिल्ली की पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित अशोककुमारजी दिल्ली, पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन के प्रवचनों का लाभ मिला।

वैराग्य समाचार

किदवईनगर कानपुर निवासी **श्रीमती पुष्पाजी जैन धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री राजकुमारजी जैन** का अत्यन्त सरल परिणामों पूर्वक ५ अगस्त, २०२२ को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा जैनपथ प्रदर्शक और वीतराग–विज्ञान पत्रिका हेतु २१००–२१०० रूपये की राशि प्राप्त हुई है; एतदर्थ धन्यवाद।

फिरोजाबाद निवासी की माताश्री पूनमजी जैन का २९ अगस्त २०२२ को आकस्मिक देह विलय हो गया। आप धार्मिक, तत्वज्ञानी महिला थी। हनुमान गंज फिरोजाबाद के मंदिर में प्रतिदिन पाठशाला का संचालन करती थीं।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र अभ्युदय को प्राप्त हों – यही भावना है।

• पंचम शतक : श्रमण शतक •

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

पहला अध्याय

(रेखता)

जानते हो तुम लोकालोक किन्तु पर में कुछ भी ना करें।
जानने में तो बाधा नहीं किन्तु करने में हस्तक्षेप।।
अरे करने में हस्तक्षेप आप भी कभी नहीं करते।
और ना कर सकते जिनराज! आप ऐसा ही हैं कहते।।30।।

लोक में कोइ किसी का करे किसी में ऐसी शक्ती नहीं।
ज़ान के ज़ेय बनें सब द्रव्य सभी में ऐसी शक्ती कही।।
अरे सामान्य गुणों में एक अनोखा ऐसा गुण[1] भी अहा।
कि जिसके कारण ही सब द्रव्य ज्ञेय बनते ही हैं - यह कहा।।31।।

आपने बतलाया जिनदेव ! कहाँ कब क्या कैसा होगा।
जानते हैं सब ही सर्वज्ञ न उसमें फेरफार होगा।।
और सब निश्चित है हे नाथ! आप यह भी बतलाते हैं।
अतः हम सभी सहज ही रहें - आप ऐसा समझाते हैं।।32।।

किसी का कुछ करने का भार किसी के माथे पर है नहीं।
जिसे जाना है भव से पार सहज हो जावेगा वह सही।।
निगोद से निकला है जिसतरह उसी विध होगा भव से पार।
जगत में अरे सभी कुछ सहज, बात यह सहज करो स्वीकार।।33।।

जगत के भी हैं जितने काज सहज ही होते हैं जिनराज।
किसी का उसमें कुछ ना चले विकल्पों से ना हो कुछ काज।।
अरे होना तो है बस वही आपने जो जाना जिनराज।
नहीं होना है उसमें फेर आपने जो देखा जिनराज।।34।।

विकल्पों से तो रे कुछ भी, काम में होना-जाना नहीं।
किन्तु कर्मों का बन्धन तुझे नियम से होगा - समझो सही।।
बहुत ही घाटे का व्यापार अरे समझो मेरे भाई।
अधिक क्या कहें जिनेश्वरदेव नहीं उलझो इसमें भाई।।35।।

निगोद से अबतक सब कुछ सहज, सातवें गुण से मुक्तितलक।
सहज सब कुछ होता आया सभी को स्वीकृत है अबतलक।।
बीच का थोड़ा सा यह काल अरे इसमें भी हो सब सहज।
यही है परम सत्य सत्पन्थ करो इसको भी स्वीकृत सहज।।36।।

अभी तक था पूरा बेहोश और अब आगे पूरा होश।
अरे ना बेहोशी में किया और जब होगा पूरा होश।।
अरे तब भी करना है नहीं और अब आया है कुछ होश।
अरे ऐसी हालत में प्रभो! अरे करने का आया जोश।।37।।

जोश में भाई खो मत होश और करने का कुछ मत सोच।
सभी कुछ निश्चित है हे भव्य! अरे इसके बारे में सोच।।
यही है परम सत्य भूतार्थ करे मत तू कोई संकोच।
अधिक क्या कहें जिनेश्वरदेव अरे तू सोच सोच तू सोच।।38।।

आज के निर्णय पर है टिका अरे तेरा भावी इतिहास।
अरे तू हो थोड़ा गम्भीर धर्म में ठीक नहीं उपहास।।
अरे तू एक बार स्वीकार हृदय की गहराई में पेठ।
अरे अन्तर में गोता लगा छोड़ दे अरे व्यर्थ की ऐंठ।।39।।

अरे समझाते हैं जिनदेव सावधानी से सुनते सभी।
किन्तु जिसके पाँचों समवाय मुक्ति में जाने के हों अभी।।
समझ में आता है सर्वांग अकेले उसको हे जिनदेव!।
शेष यों ही आते-जाते और सुनते रहते उपदेश।।40।।

जगत की बगिया सम्भली रहे अतः कुछ तो करना होगा।
उपेक्षा से तो पूरा बाग अरे बिखरा-बिखरा होगा।।
जगतजन कहें - नहीं तो अरे बिखर जावेगा पूरा बाग।
बाग न बिखरे इसके लिये बनाना होगा एक विभाग।।41।।

वनों को कौन व्यवस्थित करे और दे कौन खाद-पानी।
वे स्वयं फलें-फूलें सहज ही बिना खाद-पानी।।
हजारों पक्षी कलरव करें और चौपाये पशु विचरें।
सभी वन हरे-भरे नित रहें मिले न उन्हें खाद-पानी।।42।।

अरे हैं बागों से वन अधिक पालतू पशुओं से पशु अधिक।
सहज ही सब रहते सानन्द फूलते-फलते हैं सब सहज।।
सहज ही सारा जग चलता नहीं कोई कुछ करता है।
नहीं करने-धरने का काम सहज ही सहज सहजता है।।43।।

1. प्रमेयत्व गुण

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला

20

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : ज्ञानी-अज्ञानी की मूलतः पहचान क्या है?

उत्तर : अपने आत्मा में अपनापन अनुभव करने वाले ज्ञानी हैं और पर में अपनापन अनुभव करने वाले अज्ञानी हैं।

प्रश्न : जीवों का अज्ञान क्या है?

उत्तर : परद्रव्यों में एकत्व-ममत्व करना ही जीवों का अज्ञान है।

प्रश्न : सम्यग्ज्ञान क्या है?

उत्तर : परद्रव्यों से एकत्व ममत्व तोड़कर अपने आत्मा में एकत्व-ममत्व करना सम्यग्ज्ञान है। अतः इस एकत्व-ममत्व के आधार पर ही ज्ञानी अज्ञानी की पहिचान होती है।

प्रश्न : परद्रव्य कितने प्रकार के होते हैं? उनकी विभिन्न अपेक्षाओं को उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर : परद्रव्य तीन प्रकार के होते हैं - सचित्त परद्रव्य, अचित्त परद्रव्य और मिश्र परद्रव्य।

गृहस्थ की अपेक्षा माता-पिता, भाई-बहनादि सचित्त परद्रव्य हैं, सोना-चांदी, घर-बार आदि अचित्त परद्रव्य हैं और कपड़े-गहने से युक्त पत्नी आदि मिश्र परद्रव्य हैं।

शुभोपयोगी तपोधन की अपेक्षा शिष्यादि सचित्त परद्रव्य हैं, पिच्छी-कमण्डलु, पुस्तकादि अचित्त परद्रव्य हैं और पुस्तक सहित शिष्य आदि मिश्र परद्रव्य हैं अथवा रागादि भावकर्म सचित्त परद्रव्य हैं, ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म अचित्त परद्रव्य हैं और द्रव्यकर्म-भावकर्म दोनों मिलाकर मिश्र परद्रव्य हैं।

विषय कषाय रहित निर्विकल्प समाधि में स्थित तपोधन की अपेक्षा सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप सचित्त परद्रव्य है, पुद्गलादि पाँच द्रव्य का स्वरूप अचित्त परद्रव्य है और गुणस्थान-मार्गणास्थान जीवसमासादि परिणत संसारी जीव का स्वरूप मिश्र परद्रव्य है।

यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि गृहस्थ की अपेक्षा वाला उदाहरण ज्ञानी-अज्ञानी सभी पर घटित होगा और शुभोपयोगी व शुद्धोपयोगी वाला उदाहरण मात्र ज्ञानी पर ही घटित होगा। तात्पर्य यह है कि जो गृहस्थ शरीरादि परद्रव्य में आत्म विकल्प करते हैं, वह अज्ञानी हैं और जो गृहस्थ, शुभोपयोगी व शुद्धोपयोगी शरीरादि परद्रव्य में आत्म विकल्प न करके अपने आत्मा को ही निज जानते-मानते हैं, वे ज्ञानी धर्मात्मा हैं, प्रतिबुद्ध हैं। (क्रमशः)

राष्ट्रीय अधिवेशन एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ २५ व २६ अगस्त २०२२ को समन्वयवाणी फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में समन्वयवाणी फाउण्डेशन न्यास का राष्ट्रीय अधिवेशन, अथाई सम्मान समारोह एवं डॉ. अखिलजी बंसल का जन्मदिवस समारोह उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

२५ अगस्त को आयोजित काव्य गोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मिलापचन्दजी डण्डिया, श्री अनिलकुमारजी जैन, श्री लोकेश सिंहजी, डॉ. अखिलजी बंसल, डॉ. इन्दुजी जैन आदि उपस्थित रहे। गोष्ठी में वरिष्ठ काव्यकारों द्वारा कविता प्रस्तुत की गईं।

२६ अगस्त को प्रातः समन्वय वाणी अथाई समूह का राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित हुआ, जिसमें डॉ. एन.के. खींचा, श्री मिलापचन्दजी डण्डिया, डॉ. अखिलजी बंसल, श्री नन्दजी भारद्वाज, श्री किशोरभाई भण्डारी, श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाण्डया, श्री पानाचन्दजी जैन आदि उपस्थित रहे। संचालन श्री रामप्रकाशजी अवस्थी ने किया।

इसी समारोह में विशिष्ट १२ रचनाकारों को समन्वय वाणी अथाई गौरव सम्मान-२०२२ से सम्मानित किया गया एवं प्रत्येक रचनाकार को प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

दोपहर को डॉ. अखिलजी बंसल के जन्मदिवस पर सम्मान समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें यशस्वी पत्रकार, समन्वय वाणी के सम्पादक, समाजसेवी डॉ. बंसल एवं श्रीमती शैलजी बंसल का विशिष्ट सम्मान किया गया। इस समारोह में आई.पी.एस. श्री अनिलकुमारजी जैन, डॉ. एन. के. खींचा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमार पाटील की उपस्थिति रही। सभी अतिथियों ने डॉ. बंसल के व्यक्तित्व-कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री किशनलाल जांगिड ने किया।

मंगल आमंत्रण

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 2 अक्टूबर 2022 से रविवार दिनांक 9 अक्टूबर 2022 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

हर्ष का विषय है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की शृंखला में 25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर रविवार, दिनांक 02 अक्टूबर, 2022 से रविवार, दिनांक 09 अक्टूबर, 2022 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

उक्त शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन कराया जायेगा। अत: अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक विशेष अवसर होगा।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें :
8949033694

निवेदक
सुशीलकुमार गोदीका, अध्यक्ष | डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, महामंत्री
एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2022

प्रति,